स्वयंप्रकाश

प्यारे भाई रामसहाय

बचपन में भाषा के साथ हम लोगों का रिश्ता चुलबुल-चुहलबाज़ी का था। उससे छेड़छाड़ किए बगैर हमसे रहा नहीं जाता था। चाहे किसी का नाम हो, फिल्मी गाना या फिर कविता हो – हम किसी को छोड़ते नहीं थे।

एक दिन खाली पीरियड में बात चली कि ये जो अपने नाम के आगे कई लोग "सिंह" लगाते हैं, इसका क्या मतलब है? राम सिंह, मान सिंह, विश्वनाथ सिंह, शिव सिंह! अब जैसे नारायण सिंह में नारायण तो फिर भी समझ में आता है पर नारायण के सिंह का मतलब? नारायण क्या सर्कसवाला है?

इस पर एक दोस्त बोला कि राम सिंह, नारायण सिंह तो फिर भी ठीक है, पर सोचो कि ये गोपाल सिंह कैसा होता होगा?

कुछ देर हँसने के बाद एक दोस्त बोला, "सिंह तो चलो फिर भी ठीक है। मुझे तो ये समझ में नहीं आता कि लोग अपने अच्छे-खासे नाम के आगे 'मल' कैसे लगा लेते हैं? भँवरमल, सुजानमल, गुमानमल! और तो और प्रसन्नमल!! ये तो हद हो गई!"

सब खूब हँसे। इसी समय हमारी कक्षा में एक लड़का आया। उसका नाम हरकेश सिंह था। सब उसके पीछे पड़ गए कि बता तेरे नाम का मतलब क्या है।

एक बोला, "'हर' यानी हरि यानी भगवान। तो हरकेश यानी भगवान का बाल।"

दूसरा बोला, "'हर' यानी प्रत्येक। तो हरकेश यानी 'हर किसी का बाल'।"

तीसरा बोला, "नहीं भाई! 'हर' यानी हरी तो ठीक है। पर 'केश' जो है वो अँग्रेज़ी का है। तो हरकेश यानी 'भगवान का नगद पइसा'।"

चौथा बोला, "मेरा तो ख्याल है कि 'हर' अँग्रेज़ी का है और 'केश' हिन्दी का।"

सब खिलखिलाकर हँसे।

एक बोला, "अबे बता न सही बात क्या है? यार ये शरमा रहा है। सही बात में बताता हूँ। हरकेश में 'हर' और 'केश' दोनों अँग्रेज़ी के हैं। अब सोचना यह है कि ये 'हर' है कौन?"

एक और बोला, "सब अँग्रेज़ी के हैं तो 'सिंग' भी अँग्रेज़ी का ही होगा। क्या भैया? डू यू सिंग?"

हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया। खुद हरकेश भी हँस रहा था।

फिल्मी गाने तो हम चुपचाप सुन ही नहीं सकते थे। साथ-साथ उसकी पैरोडी भी बनाते जाते। मिसाल के तौर पर एक गाना था – "जो वादा किया, वो निभाना पड़ेगा" इसके हमारे संस्करण देखिए:

जो वादा किया, वो भुलाना पड़ेगा/जो काँदा दिया, वो कटाना पड़ेगा/जो गीला किया, वो सुखाना पड़ेगा नहीं तो पुलिस को बुलाना पड़ेगा।

एक गाना था – "तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को किसी की नज़र ना लगे। चश्मेबद्दूर"। अब इस चश्मेबद्दूर का अर्थ तो हमें पता नहीं था इसलिए हमने इसके कई सरल संस्करण बना लिए। चश्मे पे धूल/चश्मा भोत दूर/चश्मे पे धूल/चश्मे पे धू/चश्मे से क्यू आदि।

अँग्रेज़ी जुमलों का मज़ेदार हिन्दी अनुवाद करना हमारा प्रिय शगल था। हमारे अनुवाद में "मास्टरपीस" होता ता "मालिक का टुकड़ा", "सोपकेस" होता "साबुन का मामला", "हियर लाइज़ द पॉइण्ट" का हमारा अनुवाद था "यहाँ बिन्दु लेटा है।"

क्रिकेट में बगैर हास्यास्पद अनुवादों के काम ही नहीं चलता था। "लेग ब्रेक" होती थी "टाँग तोड़ू" और "सिली पॉइण्ट" – "बेवकूफ बिन्दु"। "यॉर्कर" होती थी "सुर्री" और "बाउन्सर" – "सिरतोड़ू"। "लेग कटर" होती थी "टाँगकाटू" और "वाइड बॉल" – "चौड़ी गेंद"!

लेकिन सबसे ज़्यादा मज़ा आता था कविताओं का अर्थ-अनर्थ करने में। कबीर का एक दोहा है:

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

इसका हमारा "अर्थ" देखिए:

कवि कहता है कि हे कबीरदास! चक्की से ज़रा दूर हटकर खड़े रहो। हाथ-वाथ आ गया तो रोओगे। क्योंकि इसमें कोई फँस गया तो साबुत नहीं बचता।

भाषा के साथ हमारी यह चुहल ऐसी ही थी जैसे अपनी मम्मी से कभी-कभी मज़ाक कर लेना। ऐसा करने से तो प्यार बढ़ता है ना?

ऑलम्पिक का सबसे उम्र दराज़ खिलाड़ी स्वीडन का निशानेबाज़ – ऑस्कर स्वान है। 1920 के एण्टवर्प ऑलम्पिक में 72 साल 280 दिन की उम्र में ऑस्कर ने अपना छठा पदक जीता था।

अब तक का सबसे कम उम्र का ऑलम्पिक खिलाड़ी है 10 साल का युनानी जिमनास्ट – डिमीट्रियस लाण्ड्रस। इसने 1896 के एथेन्स ऑलम्पिक में भाग लिया था।